Shodhankur Research Journal

Online Monthly September 2024 VOL -01 ISSUE-I

02

हिमांशु जोशी के उपन्यासों में नारी समस्या

प्रा.डॉ. रविंद्र आर. खरे
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला, वाणिज्य एवं कम्प्युटर ॲप्लीकेशन, डोंगर कठोरा, ता. यावल जि. जळगाव
(महाराष्ट्र)

आधुनिक युग में सबसे अधिक शोषित नारी है। घर–परिवार में नारी की अवस्था दयनीय होती जा रही थी। वह घर एवं बाहर दोनों ही स्थितियों में विवश जीवन व्यतीत कर रही है। सम्प्रति नारी एक साथ गृहिणी, पत्नी, माँ का कर्तव्य निभाती हुई, नौकरी भी कर रही है। कई जिम्मेदारियाँ संभालती हुई, तथा रोजमर्रा के जीवन में आनेवाली हर छोटी–बड़ी समस्या से जूझ रही है। ऐसे समय में नारी के अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न लगा हुआ है। पुरूष प्रधान संस्कृति में समर्पण का मिथक बनी हुई है। नारी पुरूषों के अधिकार में अपना जीवन–सर्वस्व समर्पित करने के संदर्भ में डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के विचार उचित लगते है,''वह पुरूषों द्वारा स्थापित मूल्यों को ही शाश्वत तथा महान समझने लगी और उन मूल्यों के अनुसार जीने में ही अपने जीवन की कृतार्थता समझने लगी। यही से वह खुद से दूर होने लगती है। धीरे–धीरे यह मानसिकता इतनी दृढ़ होने लगती है कि वह गुलाम है, यह गुलामी मानसिक, बौध्दिक तथा शारीरिक तीनों स्तर पर हैं, इसे स्वीकारने को भी वह तैयार नहीं होती। उल्टे पुरूष समाज द्वारा निर्मित इन मूल्यों की शाश्वतता का वह समर्थन करने लगती है।''[1]

नारी के जीवन में आज भी घर–परिवार, रिश्ते–नाते, रीति–रिवाज केन्द्रग में है। परंपरागत मानसिकता में जकड़ा हुआ पुरूष का स्त्री के प्रति अपना दृष्टिकोण यही है कि वह घर में दासी और पति को शैय्या सुख प्रदान करनेवाली है। नारी की यंत्रवत जीवन जीने की प्रक्रिया लगातार जारी है। नारी की स्थिति एवं गति के संदर्भ क्षमा शर्मा लिखती हैं कि, ''विश्व स्तर पर यह माना गया है कि यदि महिलाओं की स्थिति सुधारनी है, उनके प्रति भेदभाव कम करना है तो उनकी आर्थिक स्थिति सुधारनी होगी। स्त्रियों को यह समझ में आ गया है कि जब तक उनकी आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती तब तक उनका विकास नहीं हो सकता क्योंकि दुनिया के अट्ठावन प्रतिशत संसाधनों पर पुरूषों का कब्जा है।''[2] नारी को अपनी आर्थिक स्थिति को प्रबल बनाना होगा। हिमांशु जोशी ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन का पूर्णरूपेण चित्रण किया है।

'अरण्य' उपन्यास में नारी की समस्याओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है। उपन्यास की नायिका कावेरी की व्यथा यही है कि उसका विवाह ऐसे ठेकेदार से तय किया जाता है। जो पहले से ही दो विवाह कर चूका है, जो अब बुढ़ा हो चूका है। कावेरी अनाथ है, माधव मामा के यहाँ उसका पालन–पोषण होता है। मामा के परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय होने से, कावेरी अपनेविवाह का बोझ उन पर डालना नहीं चाहती है। समाज की दृष्टि से एक ओर बढ़ती उम्र तथा आर्थिक विपन्नता के कारण कावेरी विवश हो जाती है। कावेरी स्वयं को समर्पित करते हुए कहती है, ''बोज्यू अपने से यदि किसी का

भला हो जाय तो बुरा क्या? मेरी अब कोई चाह नहीं। अगर इत्ते परानियों को मैं तनिक भी सुख पहुँचा सकी तो इससे बड़ी बात मेरे लिए और क्या होगी ! मामा के कलेजे का कांटा भी उतर जाएगा। कावेरी कहते–कहते रूक आयी! कुछ सोचती हुई फिर आगे बोली, फिर लोक–लाज का भी तो सवाल हैं न! वैसे ही लोग बुरा–भला कहते हैं। बिना बात गाल बजाते हैं।''[3]

इससे स्पष्ट होता है कि कावेरी जैसी स्त्रियाँ समझदारी से समस्या का सामना कर सकती है। अपने मामा की आर्थिक स्थिति के कारण विवश होकर वह प्रौढ़ से विवाह करने के लिए तैयार है। उसकी आयु कम है और अधेड. ठेकेदार के साथ अपना जीवन काटने पर मजबूर है। तथा अपनी सौतों के साथ मेलजोल बनाकर पति का दुःख अपना समझकर सहनशीलता दिखाती है।

माधव पधान की विधवा बहु रूखलि का दुख स्पष्ट किया है। उनके बड़े बेटे बिस्सु के साथ रूखलि का विवाह हुआ था। लेकिन दूसरे ही साल उसकी मृत्यु हो जाती है। माधव पधान बेटे के मृत्यु के पश्चात बहू को बेटे के समान अधिकार देना चाहता है, लेकिन उसकी पत्नी पधानी को यह स्वीकार नहीं होता है। वह अपना दुख कावेरी से कहती है कि, दुख किसे नहीं आता। मुझसे बड़ी अभागिन दुनिया में क्या और भी होंगी। मुझे ही देखो न। फिर यों प्राण निकाल देना क्या ठीक है ? आतमघात तो नहीं किया जा सकता न! दिन तो रो–धो के काटने ही पड़ते है।''[4] इस प्रकार रूखलि की व्यथा कावेरी को सोचने पर मजबूर कर देती है। विधवा जीवन का अभिशाप उसे भोगना पड. रहा है। नारी का जीवन चारों ओर से समस्याग्रस्त होने के कारण नारी दयनीय बनती जा रही है। कावेरी के साथ–साथ मानिक की बहन सुकिया का जीवन तथा मानिक की माँ, माधव पधान की पत्नी पधानी रूखलि, आदि नारियाँ अभिशप्त जीवन जी रही हैं।

'महासागर' उपन्यास में नारी की मानसिक पीड़ा का अतिसूक्ष्म चित्रण मिलता है। उपन्यास के दोनों नारी पात्र संवेदनशील तथा पीड़ित है। प्रथम नायिका दीप एक अध्यापिका है, दिल्ली जैसे महानगर में अकेली रहती है। नायक साकेत से आत्मिक प्रेम है। साकेत दीप दी के घर आता–जाता रहता है, वह उसे आर्थिक सहायता भी करती है। दीप दी अपने जीवन में अकेलापन महसूस करती है। दीप से साकेत घर–गृहस्थी बसाने की बात करता है। तब दीप दी कहती है, 'हाँ, तू कहता तो ठीक है, पर उस आल–जाल से तो सोचती हूँ कि अब यही अच्छा है। जहाँ इतनी उम्र बीत गई, वहाँ कुछ और भी बीत जाएगी.... । अपनी अकेली जान के लिए कौन मुसीबत मोल ले।''[5] इससे स्पष्ट है कि वह अकेलेपन से ऊब जाती है, लेकिन वह घर–गृहस्थी के जाल तथा यांत्रिक जीवन की समस्याओं से तटस्थ रहना चाहती है।

उपन्यास का दूसरा नारी चरित्र नीना एक आदिवासी निकोबारीन लड़की है, उसका शारीरिक तथा आर्थिक शोषण होता है। नीना मजदूरी करके अपना जीवन–यापन करती है। साकेत से विवाह के पश्चात् वह दिल्ली आ जाती है। साकेत की विलासी वृत्ति तथा उसके प्रमोशन से उसका यंत्रवत जीवन, वैवाहिक सुख की कमियाँ तथा साकेत का वक्त बेवक्त घर आना, जिससे वे आत्मिक पीड़ा से त्रस्त है। नीना मानसिक पीड़ा से एक दिन

तपेदिक का शिकार हो जाती है। उसे दिल्ली का परिवेश रास नहीं आता, तब वह निकोबार जाकर अपनी जीवन–यात्रा समाप्त कर लेती है।

'छाया मत छूना मन' की नायिका वसुधा पीड़ा से त्रस्त है। अपने वैवाहिक जीवन का मोह त्याग कर अपना सर्वस्व परिवार के लिए समर्पित करते समय कई समस्याओं से उसे गुजरना पड़ता है, बल्कि मानसिक शारीरिक तथा आर्थिक पीड़ा भी सहनी पड़ती है। अपनी इच्छाओं का त्याग करके एक दिन परिवार का बोझ ढ़ोते हुए कैन्सर की शिकार बन जाती है। उसे कैन्सर से मुक्ति दिलवाने के लिए उसका प्रेमी देवेन अस्पताल में इलाज करवाने हेतु तथा उसकी स्वास्थ सुधार हेतु पहाड़ों में ले जाता है। वसुधा वहाँ भी परिवार की चिंता में तड़पती रहती है। उसकी कैन्सर की पीड़ा अधिक बढ़ती जाती है। जैसे '''यह हँसी बहुत महँगी पड़ती वसुधा को। ज्यों ही एकान्त आता, चारों ओर की घटनाएँ–सी उमड़ती हुई घेर लेती। उसे माँ की याद आती, कंचन की याद आती और याद आती यह बात कि उसकी जिन्दगी के दिन अब अँगुलियों पर गिनने–भर के रह गये। वह अधिर हो उठती। आधी–आधी रात को चीख पड़ती।''[6] इस प्रकार वसुधा अपना जीवन परिवार के लिए सर्मपण कर देती है। बहन कंचन का चारित्रिक पतन, पिताजी की बीमारी तथा माँ का विलासी स्वभाव से वह मानसिक यातनाओं से ग्रस्त रहती है।

विवेच्य उपन्यास की दूसरी नारी पात्र कंचन हैं जिसे पैसों का मोह है तथा वह अपनी विलासी वृत्ति के कारण बम्बई में देह–बेचनेवाले गिरोह में फंस जाती है, जिससे उस पर कई बार बलात्कार होता है। वह कई दिनों से भूखी–प्यासी है परंतु उसे यहाँ से वहाँ अनेक स्थानों पर लेजाते हैं। एक दिन वह वहाँ से भागने में सफल हो जाती है। कंचन की मानसिक तथा शारीरिक हालत तार–तार हो जाती है। बहन वसुधा उसकी अवस्था को सुधारने में लग जाती है। वसुधा अपने ऑफिस से बहुत सारा कर्जा लेकर उसका विवाह कर देती हैं। विवाह के पश्चात् पति नैय्यर उसका मानसिक तथा शारीरिक शोषण कर उसे प्रताड़ित करता है। कंचन यह सोचती है कि इतनी मुश्किलों से मिला घर–संसार कई उजड़ ना जाए इस भय से सारी यातनाओं को सहती है, 'कंचन दिन–रात काम में लगी रहती थी। खाना बनाना, कपड़े धोना, पोंछा लगाना, खाली वक्त में जिठानी के बच्चों को पढ़ाना–आराम का एक क्षण भी न मिलता उसे। ऊपर से सारी–सारी रात क्लब से पति महोदय आते न थे। वह उदास अकेली खिड़की पर बैठी नीम के उस काले डरावने पेड़ को देखती रहती। फिर पति का नशे में चूर होकर आना और मारना–पीटना प्रायरू चलता। यह सब अब नित्य का नियम जैसा हो गया था।''[7] इस प्रकार कंचन को पति से मिलनेवाली यातना तथा उसके ही अतीत के कारण पति उसे प्रताड़ित करके घर से निकाल देता है।

'समय साक्षी है' उपन्यास में कई नारियाँ शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक समस्याओं से त्रस्त है। उपन्यास की नारी पात्र माखेजानी, गोदावरी, मेघना तथा गर्विता आदि अनेक नारियाँ किसी–न–किसी चीज के प्रलोभन में आकर भ्रष्ट राजनीति का शिकार बन चुकी है। तिमिरवरन केंद्रीय गृहमंत्री हैं। स्टेनों तथा असिस्टेन्ट के रूप में युवतियों को नियुक्त कर उनका यौन शोषण किया जाता है। उपन्यास के अंतर्गत सबसे बड़ी समस्या

यौन शोषण की है। नौकरी तथा आर्थिक जरूरतों को पूरा करने का प्रलोभन देकर उनका यौन शोषण किया जाता है। प्रस्तुत उपन्यास की गर्विता भी यौन शोषण से पीड़ित है। उसकी विवशता एवं असहायता का फायदा उठाकर मूहल्ले का नेता जयन्त गर्विता का शारीरिक एवं मानसिक शोषण करता है, ''जो कुछ घटित हुआ, सच न लग रहा था गर्विता को। जैसे वह कोई दुरूस्वप्न देख रही हो और अचानक आँख खुल गई हो। उसके मन में केवल घृणा थी, या एक असहाय क्षोभ था, एक हिला देने वाला खेद एक ऐसा खेद जो जीवन की सबसे बहुमूल्य वस्तु खो देने पर होता है। देह पर एक भी वस्त्र न था।''[8] इस प्रकार गर्विता की मजबूरी एवं उसके प्रति चिंतित पिता को दिल का दौरा पड़ता हैं। गर्विता विवश है, असहाय है और घिनौनी व्यवस्था की शिकार है।

'कगार की आग' की नायिका गोमती अन्याय–अत्याचार तथा देहिक शोषण से संत्रस्त है। गोमती का विवाह बहुत ही कम उम्र में हो जाता है। लेकिन विवाह के कुछ दिनों बाद ही पति की मृत्यु हो जाती है। पति के मृत्यु का सारा दोष उस पर ही लगाया जाता है। गोमती के इस दोषारोप के कारण परिवार से उसे निकाल दिया जाता है। गोमती की माँ उसका पुनर्विवाह पगलासा पिरमा के साथ करवा देती है। वहाँ भी उसे अपने ही ससुर कलिया का तथा उसके बेटे तेजुआ से शारीरिक तथा मानसिक शोषण किया जाता है। उस पर हो रहे अन्याय–अत्याचार की व्यथा अपनी माँ को कहती, तब माँ समझाती है कि, 'औरत के लिए केवल वही घर है इजु। जैसे भी हो अपनी घड़ी तुझे वही काटनी है। सब दिन एक–से नहीं रहते। कभी कुछ सह भी लिया कर.... ।''[9] इस प्रकार ससुराल से मिलनेवाली यातनाओं को माँ हमेशा छिपाना चाहती है, क्योंकि परम्परा से समाज के बनाये नियमों के अधिन रहना नारी का धर्म है, तथा उसे कर्तव्य समझा जाता है। इस बात को नारी मन पर बचपन से दोहराया जाता है।

गोमती के देहिक शोषण का एक कारण उनकी सुंदरता है। वह सुंदर होने की वजह से उसके ही नाते–रिश्तेदारों कीनजर उसके सुंदर शरीर पर रहती है। उसकी सुंदरता के कारण ही उस पर अत्याचार किया जाता है। उन अत्याचारों से मजबूर होकर अपने सुंदर चेहरे को कुरूप बनाना चाहती है, ताकि लोगों की कामुक दृष्टि उससे हट जाए –''अपना रूप–रंग अपने को ही अभिशाप–सा लग रहा था उसे। गोमती सोचती रही कि नोच–नोचकर अपना चेहरा कुरूप कर ले। देवदार के जलते छिलके से झुलस ले। परमेसर भी कितना कठोर है ? इतना रूप उसे न देता तो आज यह सब न भुगतना पड़ता। बाहर के ही नहीं घर के भीतर के भी सब दुश्मन हो गये हैं !''[10] इस प्रकार अपने परिवार से मिलने वाली यातनाओं से वह विवश हो जाती है, तथा आत्महत्या करना चाहती है। परंतु अपने बेटे कुन्नू के कारण वह आत्महत्या नहीं कर पाती है। नरसिंह डांडा के खुशालराम उसे चार सौ रूपये धड़ी भरकर अपनी तीसरी पत्नी बनाकर उसका शारीरिक शोषण करता है, तथा सौतों द्वारा मार–पीट होती है किसी चीज पर अधिकार नहीं मिलता है। बेटे कुन्नू के प्रेम के खातीर वहाँ से भागकर तराई–भामर में लाला तिरपन के खेत में एक साल मजदूरन बनकर रहती है। यहाँ पर भी लाला तिरपन लाल द्वारा उसका

शारीरिक तथा आर्थिक शोषण होता है। गोमती के शरीर को वक्त–बेवक्त नोंचा जाता रहा, वह सारी यंत्रणाओं को सहती समस्याओं का सामना करती रही।

'तुम्हारे लिए' उपन्यास की नायिका अनुमेहा माँ–बाप न होने से अकेलेपन की विवशता भरी जिंदगी जीती है। अनुमेहा और विराग में प्रेम है। परंतु अनुमेहा पर विराग का मित्र सुहास भी प्रेम करता है। विराग और सुहास एक ही क्लास में पढ़ते हैं। जब अनुमेहा के साथ सुहास विवाह करना चाहता है, लेकिन हो नहीं पाता है। तब अनुमेहा के साथ विराग विवाह की बात करता है परंतु अब समय निकल चुका होता है। फलस्वरूप अनुमेहा विवश होकर अंत तक अविवाहित रह जाती है। उसे जीवन के प्रति जो मोह था अब वह समाप्त हो गया है। वह हमेशा निराशा एवं अकेलेपन की ऊब महसूस करती है। अपने–आपको विराग के योग्य नहीं समझती। वह मजबूर होकर कहती है, '' नहीं, यह मैं हरगिज. नहीं होने दूंगी। जिसे मैंने सब कुछ समझा, उसी से छल करूँ ? आप नहीं समझ सकते यह सब। आपको कैसे समझाऊं ! जीवन में नारी केवल एक का ही वरण करती है। केवल उसी को समर्पित होती है। यों शरीर का क्या है।''[11] इस प्रकार हिमांशु जोशी ने नारी की अपने मन की उदात्तता एवं आत्मा के पवित्रता का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

'सु–राज' उपन्यासिका में भ्रष्ट समाज व्यवस्था में हो रही असहाय नारी का शोषण स्पष्ट हुआ है। सु–राज की बड़ी बहू जो विधवा नारी है। उसका मानसिक तथा आर्थिक शोषण उसके ही परिवार का छोटा देवर नंदू तथा उसकी पत्नी करती है। उसके मायके से आयी कुछ वस्तुओं तथा गांगी काका ने उसके नाम करवा दी पेन्शन भी वह हड़प कर लेते हैं। उस अबला नारी से हो रहे अमानवीय व्यवहार को देखते हुए गांगिकाका व्याकुल होकर कहते हैं, ''वे सब तो करने–धरने वाले हैं – समरथ ! रोटी का बनोबस्त कैसे–न–कैसे कर ही लेंगे, पर, बहू तेरा क्या होगा ? गांगिकाका स्वर लड़खड़ा आया, इतनी लम्बी पहाड़ जैसी जिन्दगी पड़ी है, इसे तू कैसे गुजारेगी इन भूतों के बीच?.....वहाँ से लिखाकर ही नहीं लाई मुला, तो यहाँ कोई क्या करे....?''12 इस प्रकार गांगिका अपनी विधवा बहू की व्यथा को देखकर उसके जीवन में आनेवाली समस्याओं से व्यथित हो जाते हैं।

'सु–राज' की दूसरी उपन्यासिका है अंधेरा और इसमें पुलिस तथा जमींदारों द्वारा किया जानेवाला आदिवासी नारियों का शोषण केंद्र में है। आदिवासी नारी अपनी घर–गृहस्थी तथा दाम्पत्य में स्वस्थ जीवन यापन करती है, परंतु यह नारियाँ बाहरी समस्याओं से त्रस्त पायी जाती है। फारमवाले आदिवासी युवतियों को भगाकर उनके इज्जत के साथ खिलवाड़ करते हैं। गाँव की नारियाँ इनके हवस की शिकार बन जाती है। इनके भोलेपन का फायदा उठाकर तथा किसी भी चीज की लालच देकर उनके साथ अमानुष व्यवहार करते हैं। इससे मजबूर होकर या पैसों की लालच में आकर आदिवासी अपनी बेटियों को बेंच देते है। यह यथार्थ थानेदार के कथन से स्पष्ट होता है, 'कुछ साल पहले भी पास के ही शिवपुरा गाँव में ऐसे ही एक लड़की लापता हो गई थी। बाद में पूरे दो महीने बाद पता चला कि उसके माँ–बाप ने सितारगंज के किसी फारमवाले के हाथ थोड़े–से टके के लालच में बेंच दिया था।''13 इस प्रकार आदिवासी नारियों की स्थिति भयावह नजर आती है। नारीयों का शारीरिक शोषण तथा उन पर हो रहे बलात्कार वहाँ

आम बात है। पुलिस का अमानुष कृत्य तथा उन्हीं की मिली–भगत से नारियों की इज्जत लूटना इन यातनाओं से आदिवासी नारियाँ पीड़ित है।

'सु–राज' की तीसरी उपन्यासिका 'काँछा' में काँछा की माँ असहाय गरीबी के कारण विवश है। पति के लापता होने से वह अपने परिवार का बोझ सह नहीं पाती है। काँछा के बड़े भाई की मृत्यु भूख के कारण हो जाती है। आर्थिक अभाव तथा शारीरिक भूख के कारण काँछा की माँ अपने ही किसी दूर के रिश्तेदार गुरंग के साथ संबंध बना लेती है। काँछा का बालमन ये आघात सह नहीं पाता और माँ–पुत्र में तनाव निर्माण हो जाता है। माँ अपने बेटे काँछा कोसमझाते हुए कहती है, और कुछ भी न मिला तो कम–से–कम भरपेट रोटी तो मिल जाएगी – दो छाक। तन ढ़कने के लिए फटे–पुराने कपड़े.....यहाँ किसके सहारे रहे रे ? तेरे पिता को गए, इत्ते दिन हो गए.....जिन्दा होते तो क्या अब तक घर न लौटते....? माँ का गला भर आया था।''14 इस प्रकार नारी असहाय एवं निर्धन होने से किसी–न–किसी का सहारा चाहती है। अकेली नारी परिवार का आर्थिक बोझ ढो नहीं पाती है।

अंततः यह स्पष्ट है कि हिमांशु जोशी के उपन्यासों की नारियाँ समस्याओं से त्रस्त एवं शोषित है। उनका शोषण नाते–रिश्तेदार, जमींदार, पूँजीपति, शासकीय अधिकारी सभी करते है। उपन्यासकार ने भारतीय समाज में नारियोंकी गंभीर समस्या व्यक्त करते हुए उनके यातना को मुखरित किया है। वास्तव में नारियों में सहन करने की ऊर्जा होती है।

संदर्भ

1. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – डॉ. सूर्यनारायण रणसूभे, पृ. 263
2. स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य – क्षमा शर्मा, पृ. 50
3. अरण्य, हिमांशु जोशी, पृ. 101
4. पूर्ववत् , पृ. 92
5. महासागर, हिमांशु जोशी, पृ. 28
6. छाया मत छूना मन, हिमांशु जोशी, पृ. 89–90
7. पूर्ववत् , पृ. 54
8. समय साक्षी है, हिमांशु जोशी, पृ. 69
9. कगार की आग , हिमांशु जोशी, पृ. 13
10. पूर्ववत् , पृ. 16
11. तुम्हारे लिए, हिमांशु जोशी, पृ. 142
12. सु–राज, हिमांशु जोशी, पृ. 30
13. सु–राज (अंधेरा और), हिमांशु जोशी, पृ. 61
14. सु–राज (काँछा), हिमांशु जोशी, पृ. 90